* श्रीः *

* उपासना शतक *

डाक्टर रमाकान्त मुझूमदार नैपाली परिशोधित

जिसे

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द

मुम्बई

वुकसेलर अयोध्या जिला फैजाबाद ने

छपवाकर प्रकाशित किया.

CAWNPORE.
DIAMOND JUBILEE-PRESS,
1898.

॥ श्रीजानकीवल्लभो विजयतेतिराम ॥

॥ उपासनाशतक ॥

॥ दोहा ॥

रामचरन तिसरे शतक, षडगुन दिव्यबखान।
पूरनषट श्रीराम में, सब दृष्टांत न आन ॥१॥
ईश्वरसब नाहिं रामसम, मैं विचारि कहि बात।
रामचरन बड़ मालको. सबै चतुर लल चात॥२॥
परब्रह्म अवतारसब, निर्गुन अमल अडोल।
रामचरन मनयकवह, कोइकोइ एक अमोल॥३॥
यह दृष्टांत जवाहिरी, विनुहरि रतन न जान।
रामचरन एक देसहठ, तेजन बनिक अयान॥४॥
रामकृष्ण अवतार बड, बडेमें सकल प्रमान
रामचरनाजिनमानि परखि,सर्वद्रिव्यतिनजान ५

अवतारन्ह को का कहौं, जियअभाव अघरासि।
पुत्रनिदिसेवैनृपहि, सोकिमिनृपहि सोहासि॥६॥
नहिंअभाव निंदानहीं, रस विलास में सांच।
रामचरन पियबात कहि, काहु दियो नहिंआंच७॥
रामकृष्ण एकै जदपि, दै दृष्टांत जनाइ।
विलगनमानहिंचतुरजन,सुनिरसबिंगसोहाइ८
विरतिधर्म ऐश्वर्य जस, श्रीयमोक्ष शुभ जानु।
यह षट लक्षन पूरजहँ, सोइ स्वयं भगवान ॥९॥
षटगुन में गुन अमितहैं, कहै कवन कवि चोष।
रामचरन यक बुंदते, होत पपीहा तोष ॥१०॥
चारिअठारह तीनिषट, नव चौदह उपजान।
पढ़िसुनिगुनुसतसंगकरु,समुझिरामषटमान ॥
षटगुन पूरण राममें, अपर सरूप समान।
रामचरन साक्षातलै, पुनि अनुमानप्रमान १२॥

विरतिसर्वथामिलेहुतजि,त्रिगुनासिद्धिसबकाम।
बिधिबांछितश्रीमातुपितु,तजेउमुनिनहितराम॥
रामभक्तप्रिय भरतको, त्रिभुवन श्रीमुनिदीन।
श्रीसिहाइश्रीअवधलखि,प्रभुकहितदपिनलीन
कृष्णतजेपितुमातुजो, अल्प विभवपितु दोइ।
खैंचि मारिलीनो विभव,रचीद्वारिकागोइ॥१५॥
कृष्णभक्त ऊधवपरम. दवरि दवरि तहँ जात।
गोपिनते कछु गुप्तलै, कही बनावहु बात॥१६॥
कृष्णभक्त अक्रूर बड, ले भागे पनि सोधि।
पुनिऊधव दधिदुग्धलै, गोपिनको परबोधि १७

॥ इति बैराग्यपुनिधर्म ॥

धर्मकहब मर्जादको, पुनि निज कर्म समग्र।
रसना पालनिर्छलदया,सत्य उदारनअग्र॥१८॥

रामसींव मरजादकों, कृष्णजु बे मरजाद ।
रामचरनपरनारिरत, कघश्रुतिकहिसदवाद१९
जोगोपी निज कृष्णकी, तौकत गोपन व्याह ।
सखादासजोगोपकहि, तऊ पराई आहि ॥२०॥

॥ इतिमरजाद ॥

लगुनकर्म नौ ब्रह्मदो, राम कृष्ण कुल सेत ।
सबिधिगुननिधिदोउप्रभुप्रगटतजामहँजेत२१
कर्मधुरंधर रामनृप, मददलिधनु सिय व्याहि ।
सभहिभागदा दानरन, सनमुखहर्षसदाहि२२॥
कृष्ण भागलै रुक्मिनिहि, रनतेभगे दे पाछ ।
इंद्रभाग निजहितहरेउ, भार्तभागवतसाक्ष २३
इति समग्रकहि रामको, बहुकटु कहिभृगुराज ।
सहेउ अनेकन रामहँसि, पूरनघटनहिंबाज२४॥

परसराम अवतारदस, तेजराम मिलि आइ ।
रामचरनजिमिसिंधुमें, उठितरंगामिलिजाइ २५
क्रूर कहेउ सिसुपालबहु, जदांपेसही जदुराइ ।
वरदेशतसाहि अनखजुत,सतपरधेउरिसाइ २६
बलदेवउ अवतार कोइ, जदपिपक्ष कहि दीन ।
बिछुरत ताकर तेजकब, भयोकृष्णमहलीन २७॥
कहेउगमन बैकुंठाकिय, चतुरभजी बलदेव ।
सेससहस्त्र होइ जलधि, नारायण पदसव॥२८॥
कोइ कहे सोइ लषनजदि, अंतत्रिवपु श्रुतिगाइ ।
सेससिंधुबैकुंठयक, प्रभुसँग लषनसदाइ॥२९॥
तातेपूर्वापर सभुझि, लषन लखव अवतार ।
अवतारी श्रीरामजू, शास्त्रनकेर बिचार ॥३०॥

॥ इति क्रमसमग्र ॥

रामचरन गयो इंद्रसुत. सिया द्रोह खलकीन्ह।
एकनयनकरिलयोत्यहि, सियाधिरोधकोचीन्ह॥
सरन पालको रामसे, विभीषनाहिं सुग्रीव।
मेटिअंकबिधिनृपकियो, अंत परमपदसीव३२॥
कृष्णशरनगइँ गोपिका, तजिसुतपतिधनधाम।
तिनअविलनकाबनलुटेउ तदपिकछुकीननकाम
सरनआय रावनजदपि, असुरजानि कृतबाम।
लंकविभीषनरावनहिं, दियोअवधकहिराम३४॥
वज्रहरनभयभूकाबिधि, जदपिसुखी सबल्याय।
सरणजाइकहिदीनबहु, द्रव्योनकृष्णरिसाय३५
विष्णुशरनजयविजयानित, सेवापरसहिआप।
ममइच्छाकरि बोधदो, भयनिश्चरमयपाप॥३६॥

॥ इतिसरन ॥

—:o:—

निश्छल पूर्वामध्यपर, कर्म धर्म श्री राम ।
रामचरनछलसहित सब, कृष्णचंद्रके काम३७।
कृष्ण जन्म वसुदेवघर, सेइ नंद हित लाग ।
जिमिकोइलिसिसुकाकघर, प्रौढ़ भयोतवभाग॥
सिसुतेहजतियमातुपितु, छलकरिसबरिपुमारि।
जलनिधिभीतरघरकियो, सबछलदेखुविचारि।
बालिवधेउजो ओटतरु, दरसहोत अविरुद्ध ।
रामनबधहिंविरोधाबिन, तियकहितदपिकृतयुद्ध
दरस हरत अविरोधमय, खरदूषन अघधाम।
रामनिरखिरावनबधेउ, हँसिखेलाइबाधिराम४१
छत्रीअरुभृगुपतिविदित, रामदरस सब देइ ।
रामचरनजिमिचंद्रमनि, अग्निदाहहरिलेइ ४२
जिमिरविमनिद्रवरविहिलखि, तिमिरामहिंलखिजीव ।
तातेबाली ओटबाधि, राम चतुर की सींव॥४३॥

कृष्णदरस निरबैरको, काखजमन कंसादि ।
रामचरननिरछलछली, समुझित्यागिहठिवादि
विष्णुछली विंदासती, नारायण मथि सिंधु ।
कपटअमीदेदेवतन, असुरसुराछलविंदु ॥४५॥

॥ इति निरछलछल ॥

रामदयालनिषादलखि, दीन अंक भरि लीन ।
भृकुटी लखिजेहिरामकी,बिधिहरिहर छैदीन ॥
कोदयाल श्रीरामसम, कृतविरोध क्रमनीच ।
ताहिमारिनिजपददयो,लसतमुनिनसुबीच४७।
दंडकबनमुनिदुखितलखि, जलभरि राजिवनैना।
दुष्टहीनत्रिभुवनकरौ, प्रनकरिबोले बैना॥४८॥
सेवरकृत मुनिमध्यबाडि, सुग्रीवाहिं निजकीन ।
सांगविभीषनपरचली,महेउरामलखिदीन४९॥

कृष्णदया नृगपरकरी, धर्मलीक महिपाल ।
कृष्णप्रनसबधर्मकरि, जाकेपर वह हाल॥५०॥
कृष्णकृपाकरि द्रोपतिहि, वसनदानकरि सोइ ।
जिमिसुखेतयक बीजते. बीजअनेकनहोइ ५१॥
बिनुकारनतजि गोपिकन, कहौनिठुरअसकौन।
तापरऊधवकहिपठै, जरेलगावतलौन ॥५२॥
रामदयानिधि जानिसब, निर्दयनन्दकिशोर ।
मृदुकहिवजमनहरिगयो, हियकठोरजिमिमोर॥

* इतिदया *

—:o:—

सत्यसिंधुश्रीरामजी, कहिगयो चौदहवर्ष ।
रहे एकादिनआगमन, पठैनग्रकपिहर्ष ॥५४॥
कृष्णशीघ्रआवनकहेउ, पुनिऊद्धवहि पठाइ ।
हमआवतकहिदीजिये, करिकारनहिआय ५५

हजघरघर चोरीकरें, धरिलावहिं पितुपाहिं ।
सबहिं झूठकरिझूठकहिं, आपुसांचहोइजाहिं ॥
सुनिसेवरीफल रामचाखि, गुरुबूझेउकहिसांच ।
सबश्रमगेकहिरामफुर, खातजूठफलपांच५७॥

* इति सत्यवाक्य *

बड़उदारतेहि कहतश्रुति, कहुनलेइ सबदेइ ।
गुरुसुग्रीवविभीषनहिं, रामदीनकालेइ ॥५८॥
मित्राद्दिन कैपिपटादियो, पाइलंक मनिमाल ।
सोपटनिजसोमालमनि, फोरिडारिकापिलाल ॥
कृष्णप्रथम चन्दनलई, तबकुबरिहि दैरूप ।
दधिमाखनचखिगोपिकन,जबदैप्रेमअनूप ६०॥
कृष्णद्रोपतिहिपटादियो, सिसुते सेइमनलाइ ।
दियोसुदामहि तंदुलै, बालमित्रगुरुभाइ॥६१॥

द्विजपतिनिनतेभातलै, तबजदुपतिसुखदीन्ह ।
कोइगोवर्द्धनरूपहोइ, ब्रजरक्षातबकीन्ह ६२॥
प्रथमगाधिसुतकादियो. निइचरबधहितकीन ।
रामहिमुनितियकरदई, पाथरतेगतिदीन ६३॥
कोइद्विजसुतपितुअग्रमरि, रघुबरतुरतजिआइ।
द्विजगुरसुतदुखसहिअमित, दियलजाइजदुराइ।
रामजीतिरिपु पुनिदियो, कृष्णजीतिसबलीन।
उग्रसेनकोनृपकियो, नातपालनाकीन् ॥६५॥
सकृतसरनममआयउ, कोउबालमी को[illegible]म ।
कोटिजन्मअबलौअधा, अभयदेहुनिजधामद६६
कृष्ण बचनगीताकहे, सर्वधर्मताजि आप ॥
मोरिशरनकेवलगहै, मोक्षदेउँहति पाप ॥६७॥
दोआचार्य श्रीमुखबचन, बालमीकिगीतापि ।
बड़ेऐश्वर्य्यदोवचनमें, तौलुकबनजीतापि ६८॥

दामकहब ऐश्वर्यको, अमितयज्ञ कृतराम ।
द्विजत्रिभुवनजाचकजिते, सबहिदीनमनकाम ॥
जनक दीनबहु पासते, छनमेंदई लुटाइ ।
अवधसरसबैकुंठनाहिं, श्रीमुखश्रुतिसबगाइ७०
कवनयज्ञअसकृष्णाकिय, बांछितधनदै केहि ।
गर्गजाहितिथिपत्रलै, खानभरे कोंदोहि ॥७१॥
यज्ञयुधिष्ठिरकी रची, जदुपतिदीन बताइ ।
यज्ञशेषरविबंशको, धनलैआ बहु जाहि ॥७२॥
विश्वरूपमा मित्रपुनि, असनबसनकरिछीन ।
बहुदिनदुखसहिवृद्धभय, तबहरिलैधनदीन७३
कृष्णव्याह बहुकरिलई, धनश्रद्धाकछु जोर ।
कबलुटायसोपासते, तादिऐश्वर्यनथोर ॥७४॥

* इति उदार *

———:o:———

सुतातियधन ऐश्वर्यजो, तोवहभय जगवर्य ।
नासुराजजियसबसुखी, श्रुतिकहयहऐश्वर्य७५

* इतिऐश्वर्य *

—:o:—

नसकाहिये सवजीतिबो, मनजोतिबोबिशेखि ।
असकृतरसनालिंगदै, तबमनजीतबलेखि ७६॥
नामजीतिजुगलादिसब, विदितबाससबग्रन्थ ।
उभयकृष्णजीतेउनही, चलेउजोदूषितपन्थ ॥
मोटिरोटि रूचैनही, चोरिदूधदधि ात ।
ब्याहिबहुतपरनारिरत, वेदविदितयहबात ७८

* इतिजस *

—:o:—

श्रीकाहिये सोभापरम, श्रीपरतापको नाम ।
तेजविभवबलवीर्यदुति, श्रीअनेकगुनधाम ७९

रामचरनगुनलखतयक, सबलक्षन दरसाइ ।
रींधतचाउरदोइयक, सकलमरमजिमिपाइ८०
नीचकर्म करनेगई, सूपनेखा मति क्रूरि ।
रामरूपलखि रमिगई, दुष्टभावभय दूरि ८१॥
गई पूतनाकृष्ण ढिग, करननीच के काम ।
रमनिलखि कृतकर्मलघु, आपकोनतेहिकाम ॥
गाइबजाइ सुनाचकै, कृष्णमोहि ब्रजनारि ।
रामचरनदंडकतपी, तियभयराम निहारि ८३॥
रामचरन गुनएकते, बहुगुनजाने जाइ ।
जथाएकफलचाखिये, पेड़भरे रसपाइ ॥८४॥

* इतिसोभा *

मोक्ष सर्व अवतार मे, हैं बिशेष श्रीराम ।
अवधजीवनिजरूपकरि,प्रथमपठैनिजधाम ८५

थककै अंतर बहु लखब, तेज प्रताप समर्थ।
केदलीपातमेपात जिमि, अर्थअर्थमेअर्थ ८६॥
रामचरन जदुवंसनिज, कृष्णकीन का काम।
सबहिनासकरिजुक्तिकरि, गेअकेलनिजधाम॥
बालबच्छ भयेचतुरभुज, आपुकृष्णभयेअच्छ।
बिगतमोहतबबिधिदियो, सोइबालकसोइबच्छ।
षडगुनअंतरअमितगुन, जिमिपदार्थमानिमाहि।
बंसनामकछुबरनिये, समुझिलेबमनताहि ८९॥
घटिबढ़िदोषीनिसिप्रिया मालिनहोतल अहस॥
रामचरन गुरुतियगमन, चंद्रकृष्ण कोबंश९०
नित्यएकरस पूज्यसब, जगप्रकास जलदेत।
रामबंश दिनकर बिमल, मुनिपंकजसुखहेत९१
नामलखेते रूपगुन, रामचरन दरसाइ।
जिमिमानिकदेअभालखु, तबसबदिब्यलगाइ॥

रामनाममोदकमधुर, खातबदन भरिश्रीभ।
कृष्णकठाइनामरुचि, लुरखुराइबिचजीभ९३॥
सताचितआनंदनामजेहि, एथकएथकपरमान।
सोइसच्चिदानंदप्रभु, सोइस्वयंभगवान ॥९४॥
सताचितआनंदपृथकदै, रामशब्दमें जानु।
प्रथमरकारअकारमात्रै,पृथकश्रुतिबखानु९५॥
कृचिवुकचकशब्दमत, नस्यनपर्ति आनंद।
कृष्णशब्दमेमगनचित, सतानन्ददुइबन्द ९६
रामचरितरसवाक्यकहि, रामकृष्ण यकरूप।
पतिब्रतापतिभाइलघु, निजपतिनिरखुअनूप॥
चन्द बंसरविबंसभव, जगपूजो यकअंग।
रामचरनजिमिपतिब्रता, रतिनिजपतिकेसंग॥
सवनक्षत्र सबमासदिन, सबजलहै यकरीति।
रामचरनचितचातृकहि, रामस्वातिरसप्रीति॥

यदपिचन्द्रसोरहौकला, नृपति लखतचकोर ।
पूरलखे पूरनभयो, रामचरन मनमोर १०७॥
सिंधुलखतसबशशिकला, जबपूरनशशिपाइ ।
रामचरनप्रियमिलनहित, उमगनहृदयसमाइ॥
सतकबोध दृष्टांतयह, रामचरन कहिदीन ।
विलगउपासककरहिंनहिं, जेहितेपरमप्रवीन ॥

इतिश्रीदृष्टांतबोधिका उपासनासत क
भावपूरनार्थे तृतीयशतक
समाप्तम् ।